श्रीहित संध्या विलास

(1)

वन्दे वृन्दाविपिनममन्दम्।

प्रेममहारसवेगविजृम्भितमदनमहोत्सवकन्दम्।।

अद्‌भुतसुरभिसमयसहजोदयमधुरलतातरुजालम्।

नवमकरन्दमहाद्‌भुतपरिमलमत्तबिचलदलिमालम्।।

विकशदशोकबकुलकुलचम्पकमाधविकाभिरनूनम्।

सह निजवल्लभया व्रजनागरलूनविचित्रविसूनम्।।

ललितकलिन्दसुतालहरीकृतमृदुमृदुरीकरवर्षम् ।

तुमुलरतिश्रमिताऽऽलसतनुवररसिकमिथुनकृतहर्षम्।।

(2)

सखी मेरे नैननि और न भावै।

गौर स्याम बिधु बदन उदै बिनु कौन सुधा अँचवावै॥

लाड़ अवधि की बात रस भरी बिनु नहिं श्रवन सुहावै।

बन बिहार की मंगल बिरियाँ कब बड़भागिनि आवै।।

कब हित अलि धरि बीन अंक में राधा लाल लड़ावै।

वृन्दावन हित रूप जागि कब जोरी सुख बरसावै॥

(3)

देखि री बासर रहि गयौ थोरौ।

करि उपचारि जगाव न दम्पति मेरौ मान निहोरौ॥

समयौ समझि बिचक्षन तू ही या में नाहिंन भोरौ।

वृन्दावन हित रूप सिंगारि चलि गौर स्याम तन जोरौ॥

(4)

ललिता लई मृदंग बीन निजु अलि लई।

सब कर नाना जन्त्र मोहिनी धुनि भई॥

खुले दुहुँनि के नैंन सु हँसि नागर कह्यौ।

नागरि उठि किनि देखौ दिन थोरौ रह्यौ।।

नाद सुनत अहलाद रसिक मन कौं भयौ।

चौंकी उठै पिय प्यारी रवि रथ नै गयौ।।

तनक भनक बतरानि सखी श्रवननि परी।

उठनि बधाई देति जाइ बिनती करी॥

जल सुगंधि भरि झारी बदन धुवाइ कैं।

वारौं अमी वारि अस पान कराइ कैं।।

भूषन बसन सिंगारे हैं चित चाइ कैं।

भाल तिलक दृग अंजन रचति बनाइ कैं।।

मुकुट चंद्रिका सीस धरे हैं बानि कैं।

रतन सिंघासन बैठे दोऊ आनि कैं।।

धूप दीप करि सौरभ मंडित अंग हैं।

वृन्दावन हित रूप भरे रस रंग हैं ॥

(5)

श्यामसुन्दर उरसि वनमाल,

उरगभोग भुज दण्ड वर, कम्बु कंठ मणिगन विराजत।

कुंचित कच मुख ताम रस, मधु लम्पट जनु मधुप राजत।।

सीस मुकट कुंडल श्रवन, मुरली अधर त्रिभंग।

कनक कपिस पट शोभियत जनु घन-दामिनि संग।।

(6)

सुभग सुन्दरी सहज सिंगार,

सहज शोभा सर्वांग प्रति, सहज रूप वृषभानुनंदिनी।

सहजानन्द कदम्बिनी, सहज विपिन उर उदित चन्दिनी।।

सहज केलि नित-नित नवल, सहज रंग सुख चैंन।

सहज माधुरी अंग प्रति, सु मोपै कहत बनैं न।।

(7)

धूप आरती

नवल नागरी नवल युवराज,

नव-नव वन घन क्रीड़ंत, नव निकुंज विलसंत सर्वस।

नव-नव रति नित-नित बढ़त, नयौ नेह नव रंग नयौ रस।।

नव विलास कल हास नव, सरस मधुर मृदु बैंन।

नव किशोर हरिवंश हित, सु नवल-नवल सुख चैंन।।

वन विहार

(8)

श्रीराधा-आनन-कमल, हरि-अलि नित सेवंत।

नव-नव रति हरिवंश हित, वृन्दाविपिन बसंत।।

वृन्दाविपिन बसंत, परस्पर बाहुँ दंड धरि।

चलत चरन गति मत्त, करिनि-गजराज गर्व भरि।।

कुंज भवन नित केलि करत, नव-नवल अगाधा।

नाना काम प्रसंग करत, मिलि हरि-श्रीराधा।।

(9)

दोऊ लटकि लटकि पग धरत हैं।

निपट साँकरी बीथिन डोलत लाल आप गौं ढरत हैं।।

हाथ उठाइ कहत प्यारी सौं कर गहि आगैं टरत हैं।

कौतुक परम कुंज उहि नागरि पिय लोभी छल करत हैं।।

कहूँ दिखावत फूल कहूँ फल मिस ही मिस मन हरत हैं।

सहचरि दृष्टि बचाइ लतागृह हँसि पिय आँकौं भरत हैं ।।

दरस नैंन सुख परस होत तन मन आनँद अनुसरत हैं।

वृन्दावन हित रूप मिथुन मिलि क्रीड़ा बारिधि तरत हैं॥

मान-लीला

(10)

हौं जु कहति इक बात, सखी! सुनि काहे कौं डारति।

प्राण रवन सौं क्यौंऽव करत, आगस बिनु आरति।।

पिय चितवत तव चंद-वदन-तन, तू अध मुख निजु चरन निहारति।

वे मृदु चिवुक प्रलोइ प्रबोधत, तू भामिनि कर सौं कर टारति।।

विवष अधीर विरह अति कातर, सर-औसर कछुवै न विचारति।

जै श्रीहित हरिवंश रहसि प्रीतम मिलि, तृषित नैंन काहैं न प्रतिपारति।।

(11)

चलि सुंदरी बोली वृन्दावन।

कामिनि कंठ लागि किन राजहि, तू दामिनि मोंहन नौतन घन।।

कंचुकि सुरँग विविधि रँग सारी, नख जुग ऊन बने तेरे तन।

ये सब उचित नवल मोंहन कौं, श्रीफल कुच जोवन-आगम धन।।

अतिशय प्रीति हुती अंतरगति, जैश्रीहितहरिवंश चली मुकलित मन।

निविड़ निकुंज मिले रस- सागर, जीते सत रतिराज सुरत रन।।

पावस-सुख

(12)

आजु तौ झूलैं री दोऊ नवल हिंडोरना।

स्याँम सघन घन दामिनि सौं कीनौं पन

जब तुम कौंधौ प्यारी तब हम घोरना।।

झुलावैं श्रीहरिदासि दुलारी झूलैं दोऊ श्रीकुंजबिहारी

सरस सुखनि कौ एरी ओर न छोरना।

श्रीरसिकबिहारी जू थाके प्यारी जू के रसमाते

पीतांबर ओढ़ाय लै री प्यारी करत निहोरना।

(13)

झूला धीरे से झुलावो बनवारी, रे सांवरिया।

इक ओर ललिता इक ओर बिसाखा

बिचुआ में झूले राधा प्यारी , रे सांवरिया

झूला झूलत मोरा जियरा डरत है,

लचके कदंबवा की डारी, अरे सांवरिया।

झूला धीरे से झुलावो बनवारी, रे सांवरिया।

(14)

सन्ध्या भोग

साँझ समय जेंवत पिय प्यारी।

परम प्रीति सौं सखी जिमावति मेवा पाक स्वाद रुचिकारी॥

हँसि हँसि नेह निपुन ग्रासनि लै देत प्रिया मुख लाल बिहारी।

ये उनके वे इनके कर बर भोजन करत भरे मुद भारी॥

फल बहु मधुर पान रस रोचक होत त्रिपित छबि बदन निहारी।

वृन्दावन हित रूप मंजरी अलि अँचवन दै बीरी सँवारी॥

सन्ध्या आरती

आरति कीजै श्यामसुन्दर की। नन्द के नंदन राधिका-वर की।।

भक्ति करि दीप प्रेम करि वाती। साधु-संगति करि अनुदिन राती।।

आरति ब्रजजुवति जूथ मन भावै। श्याम लीला श्रीहरिवंश हित गावै।।